

|    |  |    |
|----|--|----|
| 32 | ΣΕΝ ΑΥΤΟΥ[ς λεγ]ΩΝ· ΤΙΝΑ ΜΕ ΛΕ[γουσιν]                           | 28 |
| 33 | ΟΙ ΟΧΛΟΙ ΕΙΝΑΙ <sup>19</sup> Ο[ι] ΔΕ ΑΠΟΚΡΙΘΕΝ[τες] <sup>8</sup> | 29 |
| 34 | <sup>20</sup> ΕΙΠΑΝ ἸΩΑΝΗΝ ΤΟΝ ΒΑΠΤΙΣΤ[ην]                       | 23 |
| 35 | ΑΛΛΟΙ Δ[ε] ΗΛΕΙ[αν α]ΛΛΟΙ ΔΕ ΟΤΙ Π[ρο-                           | 26 |
| 36 | ΦΗΤΗ[ς τις των αρχαι]ΩΝ ΑΝΕΣΤΗ                                   | 24 |
| 37 | ΕΙΠΕΝ ΔΕ ΑΥ[τοις υμει]Σ ΔΕ ΤΙΝΑ                                  | 24 |
| 38 | ΜΕ ΛΕΓΕΤΕ ΕΙ[ν]ΑΙ ΠΕΤΡΟ[ς] ΔΕ ΑΠΟ-                               | 24 |
| 39 | ΚΡΙΘΕΙΣ ΕΙΠΕΝ ΤΟΝ Χ̅Ν ΤΟΥ Θ̅Υ <sup>21</sup> Ο ΔΕ                 | 24 |
| 40 | ΕΠΙΤΙΜΗΣΑ[ς α]ΥΤΟΙΣ ΠΑΡΗΓ'ΓΕΙΛΕ̅                                 | 26 |
| 41 | ΜΗΔΕΝΙ ΕΓΕ[ιν] ΤΟΥΤΟ· ΕΙΠ[ω]Ν ΟΤΙ                                | 24 |

Ende der Seite korrekt

Text:

Blatt 18 → Luk 9,10-22

Beginn der Seite korrekt

|    |   |
|----|---|
| 01 | Βηθσαϊδά. <sup>9,11</sup> οἱ δὲ ὄχλοι γνόντες ἠκολού- |
| 02 | θησαν αὐτῷ· καὶ ἀποδεξάμενος αὐ-                      |
| 03 | τοὺς ἐλάλει αὐτοῖς περὶ τῆς βασιλεί-                  |
| 04 | ας τοῦ θεοῦ, καὶ τοὺς χρεῖαν ἔχοντας                  |
| 05 | θεραπείας ἰᾶτο. <sup>12</sup> Ἡ δὲ ἡμέρα ἦρξατο       |
| 06 | κλίνειν· προσελθόντες δὲ οἱ <u>ιβ</u> <sup>9</sup>    |
| 07 | εἶπαν αὐτῷ, Ἀπόλυσον τοὺς ὄχλους <sup>10</sup> ,      |
| 08 | ἵνα πορευθέντες εἰς τὰς κύκλῳ κώ-                     |

<sup>8</sup> Korrekt: ΑΠΟΚΡΙΘΕΝΤΕΣ.

<sup>9</sup> Standardtext: δώδεκα.

<sup>10</sup> Standardtext: τὸν ὄχλον.